

9855. त्रैलोक्यमिदमव्ययम् । प्रत्यानयस्व 12928. एवमिन्द्राय भगवान्प्रत्यानीय त्रिविष्टपम् Bṛh. P. 8, 23, 4. — 2) wieder zugliessen, nachgiessen: अयः प्रत्यानयति ऋत. Br. 2, 3, 4, 16. 1, 7, 4, 18. 14, 2, 4, 10. Kauṣ. 62. 109. — desid. wieder in Ordnung zu bringen versuchen: अयनीतं सुनीतिन यो ऽर्थं प्रत्यानिनीषते MBh. 5, 1499.

— व्या act. med. vertheilend eingiessen ऋत. Br. 2, 5, 2, 41. 5, 3, 5, 19. Kātj. Ça. 9, 3, 13.

— समा 1) an einen Ort Viele herbeiführen, versammeln, vereinigen, zusammenführen, zusammenbringen MBh. 2, 1294. समानिन्युर्महीपतीन् 5, 104. विदुतेषु च सैन्येषु समानीतेषु चासकृत् 9, 127. Hariv. 8262. R. 1, 1, 69. 12, 19 (18 Gorr.). वलं चैव समानय 2, 82, 21. R. Gorr. 1, 12, 27. 4, 49, 2. Vrt. in LA. 16. 42. त्रिषु लोकेषु यत्किंचिद्भूतं स्थावरजङ्गमम् । समानयदर्शनीयं ततश्च स विश्ववित् MBh. 1, 7691. समानिन्ये च तत्सर्वं भाण्डं वैवाहिकं नृपः 3, 16691. तिलं तिलं समानीय रत्नानाम् 1, 7696. समानयेत्सुल्यगुणं वधूवरं प्रजापतिः zusammenführend Çāṁ. 112. समानीय — कृत्वा die Hände zusammenbringen, an einander legen Ragh. 2, 64. Jmd (acc.) mit Jmd (instr. oder सह mit instr.) zusammenbringen: रामेण मां समानय R. 5, 23, 15. 6, 8, 30. 32. समानयस्व वैदेह्या रामम् 5, 56, 37. MBh. 5, 366. समानयिष्यति हरिः सीतया सह राघवम् R. 4, 35, 19. 21. Flüssigkeiten zusammenbringen, zusammenziessen ऋत. Br. 1, 5, 2, 16. 8, 2, 17. 2, 5, 2, 30. Kātj. Ça. 3, 5, 13. 6, 7, 22. कुम्भार्थं समानीतं यत्किंचित्कार्यमेव तु । प्रातरुत्थाय तत्सर्वं कारयामि कोरामि च ॥ angehäuften Geschäfte MBh. 13, 5872. — 2) herbeiführen, herbeibringen: समानयामास सुताम् MBh. 1, 7334. 3, 2760. 2761. R. 1, 70, 6. 73, 23. Pāṇkāt. 86, 12. 237, 24. Çuk. in LA. 44, 18. कस्माच्च तया भयभूतो ऽपि पृष्ठमारोप्यात्र समानीतः Pāṇkāt. 116, 4. समानीतेषु — वरासनेषु MBh. 1, 7717. 14, 1654. fg. शीघ्रं कलमं जलपूर्णं समानय 9, 3664. Govh. 2, 1, 8. R. 2, 37, 5. 89, 11. Ragh. 12, 78. Pāṇkāt. 262, 18. — 3) heimführen, heimbringen: क्यानष्टौ समानयत् (als Tribut) MBh. 2, 1035. समानयामास तदा विराटस्य (für V.) धनं मरुत् 4, 2136. समानीतो स्वमाश्रमम् 3, 16363. ततो नो मातरमृषिः समानीय निजाश्रमम् Bṛh. P. 7, 7, 12. इच्छामि त्वां समानेतुमद्यैव रघुनन्दनम् zu Rāma R. 5, 36, 8. — 4) darbringen (ein Opfer): पुरस्कृत्याय भवतः समानेयामहे महम् MBh. 14, 362. — caus. 1) herbeiführen lassen, zusammenberufen: ततस्तु प्रकृतीः सर्वाः समानाय MBh. 17, 15. Hariv. 4130. 6446. R. 4, 9, 9. 38, 37. zusammenbringen lassen: काष्ठानि R. 4, 24, 14. — 2) herbeikommen —, herbeibringen lassen: शक्रं समानाय MBh. 13, 1805. घृतकुम्भम् 1, 4538.

— उद् 1) hinauf —, heraufführen, herausbringen, in die Höhe bringen, aufrichten; herausheben, aufheben, emporbringen, erretten: नीचा मत्तमर्दनयः परावृजम् RV. 2, 13, 12. उत्तर्वयाणं धृषता निनेय 6, 18, 13. उत्सूर्यं नयथो ज्योतिषा सह 72, 2. 10, 137, 1. किं त्विददित्यमुन्नयति MBh. 3, 17380. fg. रेतोधाः पुत्र उन्नयति नरदेव यमनयात् MBh. 1, 3103 = Hariv. 1725. उन्नयति व्रजमतः Bṛh. P. 2, 7, 29. उर्वाम् — रसाया लीलयोन्नोताम् 3, 13, 46. स्वर्दष्टानीतधरो वराहः 6, 8, 13. aufrichten (den Jüpa) RV. 3, 8, 4. 9. अयेषु स्तनानुन्नयति ऋत. Br. 6, 5, 2, 16. Kātj. Ça. 16, 3, 27. मर्कषिभिर्हृन्नीयमानम् — अघर्धन्तम् Bṛh. P. 4, 3, 10. तदाननं सुधु — उन्नोय मे दर्शय 25, 31. ऊर्ध्वं प्राणमुन्नयत्यपानं प्रत्यगस्यति Kathop. 5, 3. (अनिलम्) तस्मादुर्वारत्तरमुन्नयते Bṛh. P. 2, 2, 21. क्षिणामि ब्रह्मणामित्रानु-
IV. Theil.

न्नयामि स्वां मरुम् VS. 11, 82. उद्विन्नयति मुकृतस्य लोकम् AV. 6, 119, 1. 2, 9, 1. मन्योरुदिमं नयामि 1, 10, 1. दुरुः 7, 103, 1. उद्विन्नयति नय 6, 5, 1. ऋत. Br. 2, 1, 4, 23. 6, 5, 2, 3. तं धीरासः कवय उन्नयति Pāṇ. Gṛh. 2, 2. अर्चकानुन्नीतवत्तम् Vop. 5, 26. herausholen Kātj. Ça. 9, 3, 10. aufsetzen, auflegen: पुमांसमुन्नयेत्प्राज्ञः शयन तप्त आयसे MBh. 12, 6105. Nach P. 4, 3, 36 und Vop. 23, 28 erscheint नी in der Bed. उत्सञ्जन (P.) oder उत्तेप (Vop.) stets als med.; als Beispiel wird in den Scholien दण्डमुन्नयते er erhebt den Stock aufgeführt. — 2) act. med. aus —, aufschöpfen, vollschöpfen: (सोमम्) वन उन्नयधम् RV. 2, 14, 9. VS. 6, 28. 8, 58. रत्नानम् ऋत. Br. 4, 3, 5, 19. 4, 1, 12. अग्निदोत्रं सुच्युन्नीतम् 12, 4, 2, 6. 6, 4, 27. TS. 3, 1, 2, 4. 6, 2, 4, 1. Ait. Br. 6, 9. यत्रैतांश्चमसानुन्नयेयुः 7, 33. Çāṁk. Ça. 7, 4, 1. उन्नोति n. Ausschöpfung, Füllung: यद्येकास्मिन्नुन्नोति यदि द्वयोः Ait. Br. 7, 5. — 3) wegführen (das Kalb von der Mutter) TS. 1, 6, 44, 3. Çāṁk. Ça. 5, 10, 6. Kātj. Ça. 26, 5, 4. Jmd bei Seite führen: मन्त्रयस्वैनमुन्नीय परवत्तं विशेषतः MBh. 14, 799. तत एकास्मन्नुन्नीय पाराशर्यो युधिष्ठिरम् । अन्नवीत् 3, 1438. 10756. वधायोन्नीयमानेषु zum Tode abführen 12, 9561. देवैकैत्र नीतानामुन्नीतानां स्वकर्मभिः nach verschiedenen Seiten auseinandergeführt, getrennt Bṛh. P. 7, 2, 21. — 4) auseinanderstreifen, schlichten: (दर्पिञ्जलीभिः) त्रिरुन्नेत् Gṛh. Jāṁg. 1, 93. — 5) viell. ausquetschen (ein Geschwür): परुषैरात्तिपत्येवं व्राणं पूतिमिवोन्नयन् MBh. 5, 2776. — 6) anstimmen: उन्नोति als Erkl. von उद्विन्न in उद्विन्नपञ्चमराग Schol. zu Gīt. 1, 39. — 7) herausbringen, hinter Etwas kommen, ausspüren, erschliessen: तस्य पदमुन्नीय MBh. 3, 12444. ततो राज्ञो चौरातिः प्रवृत्तिरुदनीयत 1, 7366. Rāṅa-Tar. 4, 353. 6, 6. उपलब्धमुपल्लवणं येन तस्याः कोपनायाः सरसमुन्नीयते मार्गः Vikr. 87, 11. प्रकृतिप्रत्ययार्थैः संकीर्णो लिङ्गमुन्नयेत् AK. 3, 3, 1. सा तु तावतोन्नीतमर्धमि प्राया दाचक. in Benf. Chr. 200, 4. ऋषेर्भावमुन्नीय Sāh. D. 37, 14. इति प्रतिशब्दादुन्नीयते Kull. zu M. 1, 1 (S. 5, Z. 4). प्राङ्निवाको वक्ष्यमाणेन शपथेन सत्यमुन्नयेत् ders. zu M. 8, 109, 252. — Vgl. उन्नय fg., उन्नाय. उन्नी fg. — desid. herauszuführen beabsichtigen: एष ह्येव साधु कर्म कारयति तं यमेभ्यो लोकैभ्य उन्निनीषते Kauṣ. Up. bei Wind. Sancara 113, 1 v. u.

— अन्नद् act. med. nach Jmd schöpfen, — füllen: हेतुंश्चमसमन्नयन्ते nach Füllung der Schale des H. füllen sie die ihrigen TBa. 1, 4, 5, 2. ऋत. Br. 4, 4, 2, 17. Kātj. Ça. 10, 6, 20. 9, 31.

— अय्यद् dazuschöpfen, dazugießen: प्रकृत्यायुन्नयधम् ऋत. Br. 4, 2, 1, 29. 5, 10, 7. Çāṁk. Br. 8, 9. अय्यभि सोमानुन्नयति immer wieder schöpfen sie Soma nach Pāṇkāt. Br. 18, 5, 14. Lātj. 8, 10, 12.

— उपोद् hinauführen: पितृं क्रेयांसं लोकमुपोन्नयति ऋत. Br. 2, 6, 1, 3. — प्रोद् hinaufbringen, erheben, emporheben: धराधरं प्रोन्नोयमानावनिमग्रदंष्ट्रया Bṛh. P. 3, 18, 2. गुणैरुदारैः संपुक्तान्प्राङ्नेयमध्यमाधमान् Kām. Nitis. 5, 69.

— समुद् 1) emporheben (eig. und übertr.): परमेष्ठी तपो मध्ये तथासन्नामवेद्य गाम् । कथमेनां समुन्नेय इति दद्यौ धिया चिरम् ॥ Bṛh. P. 3, 13, 16. तस्य (रिपोः) संशमनायासु तत्कुलीनं समुन्नयेत् Kām. Nitis. 8, 66. 9, 70. समुन्नीता (मति) MBh. 14, 638. — 2) herausbringen, erschliessen: इत्याद्यन्तसमुन्नये स्वयं भावितबुद्धिभिः Sāh. D. 75, 8. Rāṅa-Tar. 5, 139 (wo am Anf. wohl गच्छताम्नाय° zu lesen ist). H. 257. — 3) abtragen